Regd. With the Registrar of News Papers of India at PUN BIL/2002/07848
Postal Reg. No. GDP-41/2017-19

मजिलस अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

मासिक

# अन्सारुल्लाह

क़ादियान

अक्तूबर / 2020 ई०

Annual Subscription: Rs. 210/- (Per Issue: Rs. 20/-
(Weight : 50-100, grms / Issue)

तिथि 4 सितम्बर 2020ई. को आदरणीय कलीम खान साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज हैदराबाद भगवान श्री अनन्ता विष्णु साहिब दुबे अध्यक्ष महाभारत पार्टी को जमाअत अहमदिया का परिचय करवाने के पश्चात् लिट्रेचर भेंट करते हुए।

आदरणीय सय्यद शारिक मजीद साहिब नाजिम जिला बैंगलोर पुलिस अधिकारी को जमाअत अहमदिया का परिचय करवाने के पश्चात् लिट्रेचर भेंट करते हुए।

तिथि 28 सितम्बर 2020ई. को मजिलस अन्सारुल्लाह कालीकट द्वारा आयोजित आनलाईन तर्बियती इज्लास का दृश्य।

तिथि 28 सितम्बर 2020ई. को मजिलस अन्सारुल्लाह चेन्नई के सदस्यों द्वारा आयोजित वक़ार-ए-अम्ल का दृश्य।

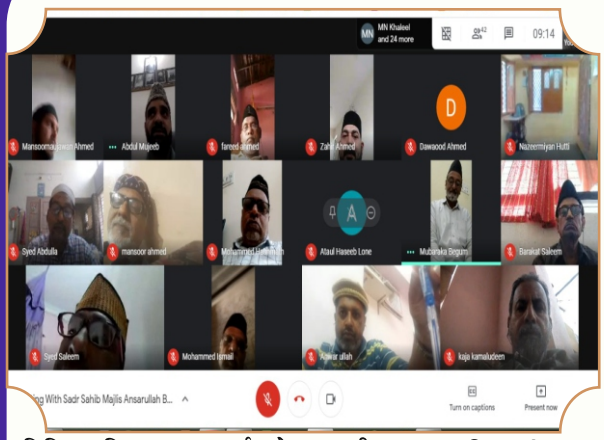

तिथि 06 सितम्बर 2020ई. को आदरणीय सदर साहिब मजिल्स अन्सरुल्लाह भारत के साथ आयोजित आनलाईन मीटिंग में कर्नाटक राज्य के समस्त ज़ुअमा,नाज़मीन भाग लेते हुए।

आदरणीय सय्यद शारिक मजीद साहिब नाज़िम ज़िला बैंगलोर निर्धन एवं असहाए लोगों को राशन भेंट करते हुए।

मजिल्स अन्सारुल्लाह ऋषिनगर कश्मीर के सदस्यों द्वारा आयोजित वक़ार-ए-अम्ल का दृश्य।

मजिल्स अन्सारुल्लाह ऋषिनगर कश्मीर के सदस्यों द्वारा आयोजित वक़ार-ए-अम्ल का दृश्य।

तिथि 28 सितम्बर 2020ई. को आदरणीय अबूबकर साहिब अमीर ज़िला एर्नाकुलम केरला आनलाईन मीटिंग में भाग लेते हुए।

तिथि 28 सितम्बर 2020ई. को आदरणीय फज़लुर्रहमान साहिब ज़ईम मज्लिस अन्सारुल्लाह चेन्नई आनलाईन मीटिंग में भाग लेते हुए।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰہِ

سورۃ الصف آیت ۱۵


**मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता**

**मासिक पत्रिका**


# अन्सारुल्लाह

**क़ादियान**


**Volume - 18   अक्तूबर 2020   Issue - 10**



**निगरान**
अताउल मुजीब लोन

**सम्पादक**
सय्यद रसूल नियाज़

**उप-सम्पादक**
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

**मैनेजर**
मक्सूद अहमद भट्टी
Ph. +91 84272 63701

**कम्पोज़िंग**
तसनीम अहमद बट्ट

**प्रैस**
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

**प्रकाशन स्थान**
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186



| विषय सूची | पृष्ठ |
|---|---|
| दर्सुल क़ुर्आन | 2 |
| दर्सुल हदीस | 2 |
| हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश | 3 |
| सम्पादकीय - सफर और पड़ाव की अवस्था एक है | 4 |
| सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन - मासिक रिपोर्ट फार्म भिजवाने की ज़िम्मेदारी तथा महत्व | 6 |
| समापन ख़िताब हुज़ूर अनवर(अ) सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह बर्तानिया 2019 ई(भाग..2) | 8 |



Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

# قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ﴿۱۰﴾ وَ اِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ﴿۱۱﴾ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ﴿۱۲﴾ يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۱۳﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿۱۴﴾ وَ اِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ﴿۱۵﴾ يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿۱۶﴾ وَ مَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ﴿۱۷﴾

(सूर: अन्फितार- आयत 10 से 17)

**अनुवाद** ख़बरदार बल्कि तुम तो जज़ा सज़ा का ही इन्कार कर रहे हो। जबकि निसन्देह तुम पर ज़रूर निगरानी करने वाले निर्धारित हैं। मुअज़्ज़िज़ लिखने वाले। वे जानते हैं जो तुम करते हो। अवश्य नेक लोग ज़रूर आसानी में होंगे। और निसन्देह बुरा काम करने वाले ज़रूर जहन्नुम में होंगे। वे इस में जज़ा सज़ा के दिन दाख़िल होंगे। और वे हरगिज़ इस से गैरहाज़िर न हो सकेंगे।

## दर्सुल हदीस

عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَلْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهٗ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْعَاجِزُ مَنْ اَتْبَعَ نَفْسَهٗ هَوَاهَا وَتَمَنّٰى عَلَى اللهِ۔ وَمَعْنٰى قَوْلِهٖ مَنْ دَانَ نَفْسَهٗ۔ يَقُوْلُ حَاسِبٌ نَفْسَهٗ فِي الدُّنْيَا قَبْلَ اَنْ يُّحَاسَبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔

(किताब सिफतुल क़यामत वर्रिक़ाक़ वल वरअ )

**अनुवाद** - हज़रत शद्दाद बिन ओस रज़ि अल्लाह तआला अन्हो रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अक़लमंद वह है जो अपने नफ़्स को काबू कर ले और मौत के बाद की ज़िन्दगी के लिए कर्म करे और असहाय तथा मूर्ख वह है जो अपने नफ़्स को इच्छाओं पर लगा दे और अल्लाह की रहमत की इच्छा रखे। مَنْ دَانَ نَفْسَهٗ का अर्थ यह है कि वह दुनिया ही में अपने नफ़्स की समीक्षा करले इस से पहले कि क़ियामत के दिन उसका हिसाब लिया जाए।

# हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

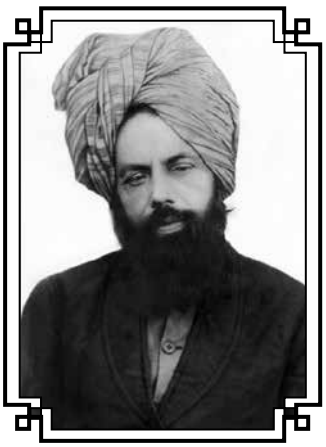

## अपने दिलों को हर-दम टटोलते रहो।

" अत: हे मेरे प्रिय भाइयो! प्रयास करो ताकि संयमी बन जाओ। बिना कर्म के सब बातें तुच्छ हैं और बिना निष्कपटता के कोई कर्म स्वीकार योग्य नहीं। अत: संयम यही है इन समस्त हानियों से बचकर ख़ुदा तआला की ओर क़दम उठाओ तथा संयम के सूक्ष्म मार्गों का ध्यान रखो।

सर्वप्रथम अपने हृदयों में विनय, शुद्धता और निष्कपटता पैदा करो और वास्तव में हृदयों के सहनशील, सुशील, दीन बन जाओ कि प्रत्येक भलाई और बुराई का बीज प्रथम हृदय में ही पैदा होता है। यदि तेरा हृदय बुराई से रिक्त है तो तेरी ज़बान भी बुराई से रिक्त होगी। इसी प्रकार तेरी आंख और तेरे समस्त अंग। प्रत्येक प्रकाश अथवा अंधकार पहले हृदय में जन्म लेता है और फिर धीरे धीरे सम्पूर्ण शरीर पर व्याप्त हो जाता है। अत: अपने हृदयों को प्रतिपल टटोलते रहो और जिस प्रकार पान खाने वाला अपने पानों को फेरता रहता है और रद्दी भाग को काटता है तथा बाहर फेंकता है। इसी प्रकार तुम भी अपने हृदयों के गुप्त विचारों, गुप्त आदतों, गुप्त भावनाओं और गुप्त प्रतिभाओं को अपनी दृष्टि के समक्ष फेरते रहो तथा जिस विचार, आदत या प्रतिभा को रद्दी पाओ उसे काटकर बाहर फेंको। ऐसा न हो कि वह तुम्हारे सम्पूर्ण हृदय को अपवित्र कर दे और फिर तुम काटे जाओ।

तत्पश्चात् प्रयास करो तथा ख़ुदा तआला से शक्ति और साहस मांगो कि तुम्हारे हृदयों के पवित्र इरादे और पवित्र विचार, पवित्र भावनाएं, पवित्र इच्छाएं, तुम्हारे अंग तथा तुम्हारी समस्त शक्तियों के द्वारा प्रकट और पूर्ण हों ताकि तुम्हारे शुभ कर्म, चरमोत्कर्ष तक पहुंचे, क्योंकि जो बात हृदय से निकले और हृदय तक ही सीमित रहे वह तुम्हें किसी स्तर तक नहीं पहुंचा सकती। ख़ुदा तआला की श्रेष्ठता अपने हृदयों में बैठाओ और उसके प्रताप को अपनी आंखों के समक्ष रखो तथा स्मरण रखो कि पवित्र क़ुर्आन में लगभग पांच सौ आदेश हैं तथा उसने तुम्हारे प्रत्येक अंग और प्रत्येक शक्ति तथा प्रत्येक स्वभाव, प्रत्येक दशा, प्रत्येक आयु, बोध का प्रत्येक बोध स्तर तथा प्रकृति का स्तर, और प्रत्येक साधना का स्तर, प्रत्येक व्यक्तिगत स्तर और समूह की दृष्टि से तुम्हें एक प्रकाशमय निमंत्रण दिया है। अत: तुम उस निमंत्रण को धन्यवादपूर्वक स्वीकार करो। तथा जितने व्यंजन तुम्हारे लिए तैयार किए गए हैं वे सारे खाओ तथा सब से लाभ प्राप्त करो। जो व्यक्ति इन सब आदेशों में से एक आदेश को भी टालता है, मैं सच-सच कहता हूं कि वह न्याय के दिन गिरफ्त के योग्य होगा।"

(इज़ाला औहाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ547-548 )

सम्पादकीय

# सफ़र और पड़ाव की अवस्था एक है।

अल्लाह तआला ने इस दुनिया को अस्थायी ठिकाना और हिल बहलावा क़रार दिया है जबकि आख़रत की ज़िन्दगी को वास्तविक और स्थायी ज़िन्दगी के नाम से याद किया है। एक सच्चे मोमिन को इस दुनिया से दिल न लगाते हुए आख़रत की ज़िन्दगी को अपना लक्ष्य बनाना चाहिए। इस दुनिया में उस की हैसियत एक मुसाफ़िर जैसी है। चाहे उसके लिए मुश्किलों से क्यों न गुज़रना पड़े। आज सफ़र के लिए नवीन आविष्कार होने के बावजूद सफ़र की कठिनाइयां और ख़तरों से किसी को इन्कार नहीं है। चूँकि सफ़र और सक़र(जहन्नुम) की अवस्था एक है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।اَلسَّفَرُ قِطْعَةٌ مِّنَ الْعَذَابِ (बुख़ारी) कि सफ़र अज़ाब का एक टुकड़ा है। हज़रत इब्ने उम्र रिवायत करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे कंधों को पकड़ा और फ़रमाया كُنْ فِى الدُّنْيَا كَاَنَّكَ غَرِيْبٌ तू दुनिया में ऐसा बन जा मानो तो परदेसी है या रास्ता में चलने वाला मुसाफ़िर है

(बुख़ारी किताबुल रिकाक हदीस नम्बर 5932)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं

"मुझे याद है बचपन में चूँकि मुझे पहाड़ों पर जाने का बहुत शौक़ था। हिमाला के ख़ूबसूरत पहाड़ों पर जो एक बड़ा सिल्सिला है जब भी जाता था और जब स्कूल के छुट्टी के दिन ख़त्म हो रहे होते थे और वापस जाना होता था तो मुझे बहादुरशाह ज़फ़र का यह शेअर याद आ जाता था...

जो चमन से गुज़रे तो ए सबा
तू यह कहना बुलबुल-ए-ज़ार से
कि ख़िज़ां के दिन भी क़रीब हैं
न लगाना दिल को बहार से

...मुसाफ़िर की तरह रहोगे तो आराम की ज़िन्दगी के साथ तुम्हारे सम्बन्ध ठीक रहेंगे और तकलीफ़ की ज़िन्दगी के साथ भी तुम्हारे सम्बन्ध दरुस्त रहेंगे। हज़रत सुहैल रज़ि वर्णन करते हैं कि एक व्यक्ति आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और निवेदन किया। हे अल्लाह के रसूल! मुझे कोई ऐसा काम बताईए कि जब मैं उसे करूँ तो अल्लाह तआला मुझसे मुहब्बत करने लगे और बाक़ी लोग भी मुझे चाहने लगें। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया दुनिया से बे रग़बत हो जाओ। अल्लाह तआला तुझसे मुहब्बत करने लगेगा और यही काम तुम्हारे लिए लोगों की मुहब्बत भी पैदा कर देगा। यह फ़रमाया कि जो कुछ लोगों के पास है उसकी इच्छा छोड़ दे तो लोग तुझसे मुहब्बत करने लगेंगे।"

(सबीलुर्रशिाद भाग 3 पृष्ठ 348 से 349)

दुनिया से सम्बन्छ विच्छेद कर के अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए कोशिश करने को तबत्तुल इल्लाह कहते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं।

"अल्लाह तआला से ताल्लुक़ के लिए एक महवियत की ज़रूरत है। हम बार-बार अपनी जमाअत को इस पर क़ायम होने के लिए कहते हैं।

क्योंकि जब तक दुनिया की तरफ़ से इन्क़िता (यानी तबत्तुल,अलैहदगी)और इसकी मुहब्बत दिलों से ठंडी होकर अल्लाह तआला के लिए फ़ितरतों में जोश और महवियत पैदा नहीं होती उस वक़्त तक दृढ़ता उपलब्ध नहीं हो सकती।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 33)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं कि

"ये लोग(सहाबा रज़ि जो हैं हमारे लिए उस्वा हसना हैं .. हज़रत उम्र .. हज़रत अबूउबैदह के साथ उनकी क़ियामगाह पर तशरीफ़ लाए। घर पहुंच कर देखा कि वहां सिर्फ एक तलवार, ढाल, चटाई और एक प्याले के सिवा कुछ न था। हज़रत उम्र ने फ़रमाया हे अबू उबैदह कुछ सामान भी मुहय्या कर लेते.. हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने निवेदन किया हे अमीरुल मोमेनीन! सामान तो मुहय्या कर सकता हूँ मैं लेकिन फिर सुविधाओं और सहूलतों को देखकर इन्हीं चीज़ों में पड़ जाऊँगा इस लिए मैं नहीं चाहता कि ऐसी चीज़ें रखों।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 9 सितम्बर 2020 ई)

अल्लाह तआला हमें इस पर अनुकरण करने का सामर्थ्य प्रदान फरमाए। आमीन।

**(हाफिज़ सय्यद रसूल नयाज़)**


**INDIAN AUTO**

**हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।**

**P. Ali Koya**

CALICUT (KERALA)

**"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"**

**MUSTAFA BOOK CO**

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

**KANNUR-1 (KERALA)**

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

**तालिबे दुआ :**

MUSADDIQ AHMAD

**Mobile : 098451-98560**

**Tel : +91 (80) 41636612**

**Web : www.sonetsolutions.in**

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

# मासिक रिपोर्ट फार्म भिजवाने की ज़िम्मेदारी तथा महत्तव

मज्लिसों में नेकियों में आगे बढ़ने की रूह फूँकने के लिए मज्लिसों में मुवाज़ना का रिवाज ज़ैली तन्ज़ीमों में मौजूद है। जिस के लिए मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की तरफ़ से सर्कुलर नम्बर 45 के द्वारा मज्लिसों को सूचित किया गया था कि भविष्य में सालाना रिपोर्ट जुलाई से जून तक भिजवानी होगी। सारे भारत में उत्तम कामों में 50 से अधिक तजनीद वाली प्रथम दस मज्लिसों और 50 से कम तजनीद वाली प्रथन दस मज्लिसों को सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के मुबारक दस्तख़त किए गए बरकत वाले प्रमाण पत्र से सम्मानित किया जाता है। निसन्देह सय्यदना हुज़ूर अनवर के दस्तख़त वाले प्रमाण पत्र प्राप्त करना किसी भी मज्लिस के लिए बहुत सौभाग्य और बरकत का कारण है। इस अवसर पर रिपोर्ट भिजवाने के बारे में कुछ ज़रूरी बातें आप की सेवा में प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

(1) सम्मान्नीय ज़ुअमा/ज़ुअमा आला की मासिक कार-गुज़ारी रिपोर्ट प्रत्येक महीने की 05 तारीख़ तक और ज़िला के नाज़मीन की रिपोर्ट 10 तारीख़ और इलाक़ा के नाज़मीन की रिपोर्ट 15 तारीख़ तक मर्कज़ को प्राप्त होनी चाहिए।

(2)मजालिस अन्सारुल्लाह भारत से आई हुई रिपोर्टों की रोशनी में प्रत्येक महीना में बाक़ायदगी के साथ सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की सेवा में मासिक और सालाना कार-गुज़ारी रिपोर्ट पेश की जाती है। जिस पर हुज़ूर अनवर दुआओं और क़ीमती उपदेशों से नवाज़ते हैं।

(3)कुछ मज्लिसों में बहुत उत्तम काम होता है। परन्तु ओहदेदारान रिपोर्ट भिजवाना ज़रूरी नहीं समझते या रिपोर्ट प्रत्येक महीना बाक़ायदगी के साथ समय पर नहीं भिजवाते। रिपोर्ट संकलित करके रिकार्ड सुरक्षित रखने में मज्लिस की सतह से लेकर देश की सतह तक तारीख़ सुरिक्षत होने के इलावा कई लाभ हैं। अत: रिपोर्ट भिजवाना न केवल ज़रूरी है बल्कि नेकी का काम है।

(4) मज्लिस से आने वाली रिपोर्ट फार्म की रोशनी में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज के सेवा में सामूहिक रूप से रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है जिन मज्लिसों की तरफ से रिपोर्टें प्राप्त होती हैं वे अवश्य हुज़ूर अनवर की दुआओं का हिस्सा बनती हैं और जो रिपोर्टें नहीं भिजवातीं वे वंचित रह जाती हैं।

(5)रिपोर्ट भिजवाने का एक उद्देश्य यह भी है कि प्रत्येक महीना के अन्त में हम अपने कामों की समीक्षा करें कि हम कहां पर हैं और इस के

फलस्वरूप अपने कामों को बेहतर बनाएं।

(6) रिपोर्टों के नतीजा में केन्द्र के साथ सम्पर्क मज़बूत होता है जमाअत तथा तंज़ीम की स्तह पर सम्पर्क मज़बूत रखना और अपने कामों की रिपोर्ट भिजवाना ज़रूरी है। इस के बिना मज्लिस की हस्ती न होने के बराबर हो जाती है।

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दिनांक 25 दिसम्बर 2013 ई को सिंगापुर, इंडोनेशिया, मलेशीया, थाईलैंड, फ़िलपाईन और बर्मा के मज्लिस आमला अन्सारुल्लाह के सदस्यों को हिदायत देते हुए फ़रमाया

"तीनों ज़ैली तंज़ीमें मासिक रिपोर्टें सीधा मुझे भिजवाया करें। लंदन दफ़्तर प्राईवेट सेक्रेटरी में तीनों ज़ैली तन्ज़ीमों के विभाग हैं। इन के ऑफ़िसिज़ हैं जो सारा रिकार्ड रखते हैं और रिपोर्टों पर नियमित मेरी तरफ़ से हिदायतें भिजवाई जाती हैं।"

(उद्धरित सबीलुर्रशाद भाग 4 पृष्ठ 374)

अत: हुज़ूर अनवर के इरशाद के अनुसार जुअमा/जुअमाए आला /नाज़मीन किराम से सविनय निवेदन है कि प्रत्येक महीना नियमित रिपोर्ट भिजवाने को अनिवार्य रूप से अपने दैनिक कामों का हिस्सा बनाएँ। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान फ़रमाए। आमीन

**अताउल मुजीब लोन**

**सदर मजलिस अन्सारुल्लाह भारत**


Maqbool Ahmed
Cell : 9949310679
: 9949209561

Plant Medicine

Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles

H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030

زبیر احمد شحنہ

ZUBER

Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

**क्या हम अन्सारुल्लाह कहलाते हुए अपनी ज़िन्दगियां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा के अनुसार ढालने की चेष्टा कर रहे हैं।**

**समापन ख़िताब अमीरुल मोमनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़**

**सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह यूके दिनांक 15 सितम्बर 2019 ई (भाग..2)**

फिर अपने आचरण और व्यावहारिक हालतों को बेहतर करने की नसीहत फ़रमाते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"यदि तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों संसार की सफलता प्राप्त हो''हमेशा की सफलता प्राप्त हो, दोनों जहानों की सफलता प्राप्त हो ''और लोगों के दिलों पर फ़तह पाओ तो पवित्रता धारण करो, अक़ल से काम लो और अल्लाह तआला की पुस्तक की हिदायतों पर चलो।' कलामे इलाही की हिदायात पर चलने के लिए, उनको प्राप्त करने के लिए क़ुरआन करीम को पढ़ना ज़रूरी है। उसे समझना ज़रूरी है। न केवल अनुवाद बल्कि तफ़सीर जानना भी ज़रूरी है। फ़रमाया कि ''ख़ुद अपने आप को सँवारो और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे। किसी ने क्या अच्छा कहा है ''कि

सुख़न कज़ दिल बुरुँ आयेद नशेंद बर दल

कि दिल से निकली हुई बात दिल पर असर करती है। फ़रमाया कि ''अत: पहले दिल पैदा करो। यदि दिलों पर असर करना चाहते हो तो व्यावहारिक ताक़त पैदा करो क्योंकि कर्म के बिना कथन की ताक़त और इन्सानी शक्ति कुछ लाभ नहीं पहुंचा सकती।' बड़ी अहम बात है फ़रमाया कि कर्म के बिना कथन की ताकत और इन्सानी शक्ति केवल बातें या कोई और ताक़त जो है कोई लाभ नहीं पहुंचा सकती।''ज़बान से बातें करने वाले तो लाखों हैं। बहुत से मौलवी और उल्मा कहला कर मिंब्बरों पर चढ़ कर अपने आप को रसूल का नायब और अंबिया का वारिस क़रार देकर उपदेश करते फिरते हैं कहते हैं कि गर्व, अहंकार , बुरे कामों से से बचोगे परन्तु जो उनके अपने कर्म हैं और जो करतूतें वे ख़ुद करते हैं''वे ऐसी बातें हैं फ़रमाया कि इस से तुम अंदाज़ा लगा सकते हो इन नसीहत करने वालों की बातों का प्रभाव नहीं होता। इसलिए हम में से हर एक के लिए आप ने फ़रमाया कि तुम ने यदि उपदेशक बनना है, तुमने इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाना है तो हर एक को अपने कथन तथा कर्म को एक करना होगा ताकि फिर दुनिया पर भी हम अपना प्रभाव स्थापित कर सकें।

फिर आप फ़रमाते हैं "यदि इस प्रकार के लोग व्यावहारिक ताक़त भी रखते" जो यह नसीहतें करते हैं यदि उनकी व्यावहारिक ताक़त भी होती "और कहने से पहले ख़ुद करते तो क़ुरआन शरीफ़ में لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ (अस्सफ़ 3)कहने की क्या ज़रूरत पड़ती? यह आयत बतलाती है कि दुनिया में कह कर ख़ुद नाकरने वाले भी मौजूद थे और हैं और होंगे।"

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 67)

परन्तु जो अल्लाह तआला की नसीहतों पर अनुकरण करेंगे उनका सुधार भी हो जाएगा। अपनी बातों और नसीहतों पर अनुकरण करने और अक़ल और कलामे इलाही से काम लेने की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

फ़रमाते हैं कि

"मेरी ये बातें इसलिए हैं कि ताकि तुम जो मेरे साथ सम्बन्ध रखते हो और इस सम्बन्ध के कारण से मेरे अंग हो गए हो इन बातों पर अनुकरण करो और अक़्ल और कलामे इलाही से काम लो ताकि सच्ची मार्फ़त और यक़ीन की रोशनी तुम्हारे अन्दर पैदा हो और तुम दूसरे लोगों को अंधकार से नूर की तरफ़ लाने का माध्यम बनो। इसलिए कि आजकल आरोपों का आधार तिब्बी और तबाबत और हैयत के मसलों के अधार पर है। इसलिए अनिवार्य हुआ कि इन उलूम की माहीयत और कैफ़ीयत से आगाही प्राप्त करें ताकि जवाब देने से पहले आरोप की हक़ीक़त तो हम पर खुल जाए।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 68)

आप अलैहिस्सलाम ने कई बार नसीहत फ़रमाई कि जो आप अलैहिस्सलाम की बातों पर अनुकरण करने वाले हैं उनसे ख़ुदा तआला का उन्नति का वादा है। आप ने फ़रमाया कि मेरे मानने वाले इलम तथा मार्फ़त(अनुभूति) में उन्नति करेंगे। फ़रमाया यह उनसे वादा है जो अनुकरण करने वाले हैं न कि हर एक जो कहे कि मैं मसीह मौऊद की बैअत में आ गया हूँ और अनुकरण नहीं है इस से वादा हरगिज़ नहीं है। यदि अनुकरण नहीं तो वादा भी पूरा नहीं होगा। एक जगह इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए आपने फ़रमाया

अल्लाह तआला ने क़ुरआन में फ़रमाया है।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

(आले इम्रान 56) यह तसल्ली देने वाला वादा नासरह में पैदा होने वाले इब्ने मर्यम से हुआ था परन्तु मैं तुम्हें बशारत देता हूँ कि यसू मसीह के नाम से आने वाले इब्न मर्यम को भी अल्लाह तआला ने इन्हीं शब्दों में सम्बोधित कर के बिशारत दी है। अब आप सोच लें कि जो मेरे साथ सम्बन्ध रखकर इस महान वादा और महान सु-ख़बर में शामिल होना चाहते हैं क्या वे वह लोग हो सकते हैं जो अम्मारा के दर्जे में पड़े हुए हों। अल्लाह तआला उन्हें काफ़िरों पर प्राथिमकता देगा और क़यामत तक उन पर प्राथिमकता देगा जो सही अनुकरण करने वाले हैं। जो अनुकरण नहीं करने वाले उनको नहीं। आप ने फ़रमाया कि अब आप सोच लें कि जो मेरे साथ सम्बन्ध रखकर इस महान वादा और महान बशारत में शामिल होना चाहते हैं क्या वह वे लोग हो सकते हैं जो अम्मारा के दर्जे में पड़े हुए दुराचार की राहों पर चलने वाले हैं? जिनके दिल छोटी बुराईयों और बड़ी बुराईयों में पड़े हैं उनका सुधार नहीं हो रहा। फ़रमाया नहीं, हरगिज़ नहीं। फ़रमाया कि यह वादा तो उन लोगों के साथ है जो अल्लाह तआला के इस वादा की सच्ची क़दर करते हैं और मेरी बातों को क़िस्सा कहानी नहीं जानते। आप फ़रमाते हैं याद रखो और दिल से सुन लो। मैं फिर एक-बार उन लोगों को सम्बोधित करके कहता हूँ जो मेरे साथ सम्बन्ध रखते हैं और वह सम्बन्ध कोई साधारण सम्बन्ध नहीं बल्कि बहुत ज़बरदस्त सम्बन्ध है और ऐसा सम्बन्ध है कि जिसका प्रभाव न केवल मेरी ज़ात तक बल्कि उस हस्ती तक पहुंचता है जिसने मुझे भी इस सम्मान्नीय सम्पूर्ण इन्सान की ज़ात तक पहुंचाया है जो दुनिया में सच्चाई और रास्ती की रूह लेकर आया। मैं तो यह कहता हूँ कि यदि इन बातों का प्रभाव मेरी ही ज़ात तक पहुंचता तो मुझे कुछ भी चिन्ता और फ़िक्र न थी और न उनकी परवाह थी परन्तु इस पर बस नहीं होता। इसका प्रभाव हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और ख़ुदा तआला की सम्मान्नीय ज़ात तक पहुंच जाता है। अत: ऐसी अवस्था और हालत में तुम ख़ुद ध्यान देकर सुन रखो कि यदि इस बशारत से हिस्सा लेना

चाहते हो और इस के मिस्दाक़ होने की इच्छा रखते हो कि क़यामत तक तुम प्राथिमकता प्राप्त करो काफ़िरों पर और इतनी बड़ी कामयाबी कि क़यामत तक काफ़िरीन पर विजयी रहोगे उस की सच्ची प्यास तुम्हारे अन्दर है तो फिर इतना ही मैं कहता हूँ कि यह सफलता उस समय तक प्राप्त न होगी जब तक लव्वामा के दर्जा से गुज़र कर मुतमइन्ना के मीनार तक न पहुंच जाओ। बुराई होती भी है तो दिल इस को बुरा भला करना चाहिए और फिर कोशिश होनी चाहिए उस के लिए और फिर धीरे-धीरे अल्लाह तआला की मदद से अल्लाह तआला के क़ुरब प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए और इस वक़्त वहां तक पहुंचना है जहां अल्लाह तआला भी राज़ी हो। अपनी नेकी और तक़्वा के स्तर को बढ़ाना होगा, अल्लाह तआला से विशेष सम्बन्ध हमें पैदा करना होगा। यह नहीं कि पाँच नमाज़ें भी वक़्त पर न पढ़ सकें और अपने काम की व्यस्तता का बहाना हम कर दें। आप फ़रमाते हैं इस से अधिक और में कुछ नहीं कहता कि तुम लोग एक ऐसे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध रखते हो जो अल्लाह तआला की तरफ से मामूर मन है अत: उस की बातों को दिल के कानों से सुनो और इस पर अनुकरण करने के लिए सदैव तैयार हो जाओ ताकि उन लोगों में से नाहो जाओ जो इक़रार के बाद इन्कार की गन्दगी में गिर कर सदैव का अज़ाब ख़रीद लेते हैं।

एक अवसर पर इस तरफ़ ध्यान दिलाते हुए कि हर अहमदी को तक़्वा की राह धारण करनी चाहिए क्योंकि शरीयत का सार ही यह तक़्वा है आप फ़रमाते हैं

"चाहिए कि वह तक़्वा के मार्ग को धारण करें क्योंकि तक़्वा ही एक ऐसी चीज़ है जिसको शरीयत का सार कह सकते हैं और यदि शरीयत को संक्षिप्त रूप से वर्णन करना चाहें तो शरीयत का तत्व तक़्वा ही हो सकता है। तक़्वा के स्तर और श्रेणी बहुत हैं परन्तु यदि सच्चा मांगने वाला हो कर आरम्भिक श्रेणियां और स्तरों को दृढ़ता और श्रद्धा से तय करे तो वह इस सच्चाई और सच्ची मांगने के कारण से उच्च स्तर को पा लेता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है। اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ

(सूरह अल्माइदा आयत 28 )

मानो अल्लाह तआला मुत्तक़ियों की दुआओं को स्वीकार फ़रमाता है। यह मानो उसका वादा है और उसके वादों में।" अर्थात अल्लाह तआला के वादों में "देरी नहीं होती।" अल्लाह तआला अपने वादों के ख़िलाफ़ नहीं करता। "जैसा कि फ़रमाया है। اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ (अर्रअद 32)

अत: जिस हाल में तक़्वा की शर्त दुआ की स्वीकारियता के लिए एक अनिवार्य शर्त है तो एक इन्सान अज्ञान और मार्ग से हट कर यदि दुआ की स्वीकारियता चाहे तो क्या वह अज्ञान और नादान नहीं है। "तक़्वा तो शर्त है और यदि इन्सान ग़ाफ़िल हो और फिर कहे मैं ने क़िस्मत से आज एक दुआ कर ली थी। आज मैंने बड़ा लम्बा सिज्दा कर लिया था और अल्लाह तआला ने स्वीकार नहीं किया तो इसको क्या कहेंगे। फ़रमाया अज्ञान और मूर्ख है वह, बेवक़ूफ है पागल है। फ़रमाया "अत: हमारी जमाअत को अनिवार्य है कि जहां तक मुमकिन हो हर एक उनमें से तक़्वा की राहों पर क़दम मारे ताकि दुआ स्वीकारियता का आन्नद और मज़ा प्राप्त करे और ईमान की वृद्धि का हिस्सा पा ले।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 108-109)

(शेष.....)